जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
• जिन शासन से जुड़े और जोड़े	१५	• मंत्राधिराज प्रवचन सार	५९
• सरकार जैन साधुओं की सुरक्षा को लेकर ठोस नीति कायम करें	१६	• प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर	६२
• संयोग पाकर जागें, जागकर साधना में आगे बढ़े	१७	• आपले पणातील सख्य	६५
• स्वतन्त्रता का दिवस सुहाना विकृतियों से मुक्त बनें	२१	• जागृत विचार	६६
• कव्हर तपशील	२४	• रंगबिरंगी : ❊ रंग गुस्से का ❊ रंग आशा निराशा के	६७
• बहिन और भाई का जग में, राखी का त्योहार	३१	• ''जैना'' कन्वेंशन २०२३ - अमेरिका	६८
• नफरत Vs प्यार	३७	• दि पूना मर्चन्ट चेंबरचे मुख्यपत्र : वाणिज्य विश्व सुवर्ण महोत्सव अंक	७०
• मोक्ष मार्ग के २१ कदम : परिग्रह छोडें - संतोषी बनें	३९	• आनंद जैन पाठशाला	७१
• सुविचार	४२	• चंद्रयान ३ : शास्त्रज्ञ श्री. संजयजी देसर्डा	७२
• भारतीय संस्कृतीत जैन धर्माचे योगदान	४३	• महाराष्ट्र व्यापी व्यापार परिषद आयोजन - पुणे	७३
• सुक्ति से मुक्ति : प्रेम	४७	• वैराग्य वाणी	७५
• हास्य जागृति	४९	• नकारत्मक सोच से पाएँ छुट्टी	७६
		• जैन मुनी हत्येच्या निषेधार्थ मुक मोर्चा - पुणे	८३

- बोथरा परिवार – मोफत घरकुल, अहमदनगर, भूमीपूजन ८५
- श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. ८६
- डॉ. किशोर देसर्डा, पुणे – प्राचार्यपदी ८७
- सीखने की कोई उम्र नहीं होती ८८
- भारतीय जैन संघटना, पुणे शहर ९२
- श्री. अशोकजी मुथा – निवड ९२
- सौ. पूजा बोथरा – सुयश ९२
- अकबर की नमाज ९३
- सुधा मूर्ति बोली ९४
- अरिहंत जागृती मंच – पुणे ९५
- वीतराग सेवा संघ – पुणे ९५
- सुरक्षा ३ : सुरक्षा स्वयंसंचालित नहीं है उसके लिए सोचिए ९७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. • Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जिनशासन से जुड़े और जोड़ें

प्रवचनकार : डॉ. श्री. समकितमुनिजी म.सा. (चातुर्मास – आदिनाथ स्थानक, पुणे)

चातुर्मास को यादगार बनाने के लिए स्वयं भी धर्म से जुड़ें और दूसरों को भी जोड़ें । स्वयं भी धर्म की प्रभावना करें, दूसरों से प्रभावना कराएँ और जो प्रभावना कर रहा है उसका अनुमोदन करें । क्योंकि 'करना-कराना और अनुमोदन करना' यह हमारी प्राचीन संस्कृति रही है ।

सुनते हैं दशार्नभद्र राजा का प्रसंग । जब उद्यानपालक ने आकर दशार्नभद्र राजा को खुश खबरी सुनाई; राजन! ''उद्यान में परमात्मा प्रभु महावीर पधारे हैं'' । दशार्नभद्र राजा यह सूचना पाकर खुशी से झूम उठा । इतना आनंदित हुआ, इतनी खुशी हुई कि उस समय उसके शरीर पर जो भी आभूषण (जेवर) थे वो सब उतार कर उद्यानपालक को दे दिए । राजा यहीं तक ही सीमित नहीं हुआ, अपने खजानची को बुलाकर कहा – इसे एक लाख सोने की मुद्राएँ देने के साथ-साथ सोने की जीभ बनाकर भी दो क्योंकि इतनी शुभ बात इसकी जुबान ने बताई है ।

धर्म प्रभावना कैसे होती है, कैसे की जाती है धर्म की प्रभावना, यह समझना हो तो दशार्नभद्र राजा के इस उदाहरण के माध्यम से समझ सकते हैं । क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ ? क्या आपने कभी ऐसा किया। किसी ने आकर आपको गाँव में संतों के आगमन की जानकारी दी हो और आपने जानकारी देने वाले को धन्यवाद दिया हो । क्या कभी आपने सूचना देने वाले का उत्साह बढ़ाया ?

हम लोग धर्म की प्रभावना करते नहीं, केवल छोटी-छोटी बातों में ही उलझ कर रह जाते हैं । वरना धर्म की प्रभावना करना तो श्रावक का कर्तव्य बताया है।

गांधार नगर के सेठ को जब उनके कर्मचारी के द्वारा सूचना मिली कि तुम्हारे गुरु इस नगरी में आए है। यह सुनकर सेठ को इतनी प्रसन्नता हुई कि कमर पर जो चाबियों का गुच्छा लटक रहा था, उसे निकाल कर अपने कर्मचारी के सामने रकते हुए कहा, तुम इसमें से एक चाबी निकाल लो, उस चाबी से जिस गोदाम, कमरे, तिजोरी या दुकान का ताला खुलेगा उसमें जो भी सामान होगा वह सब तुम्हारा । उस सेठ की संतों के प्रति कितनी श्रध्दा-भक्ति रही होगी, कितना प्रेम रहा होगा कि सूचना देने वालें को तुरन्त चाबी का गुच्छा निकाल कर दे दिया । जबकि उस चाबियों के गुच्छे में सब चाबियाँ थी, दुकान की, तिजोरी की, गोदाम आदि की सब चाबियाँ थी । सूचना देने वाले ने उस चाबियां के गुच्छे में से सबसे बड़ी चाबी निकाली । सेठ ने अपने मॅनेजर को बुलाकर कहा – इस चाबी से जो ताला खुले, उसमें जितना माल है और उस माल की जितनी कीमत हो इनको देकर आदर सहित विदा करो ।

ये प्रलोभन नहीं प्रभावना है । 'प्रलोभन और प्रभावना' इन दोनों में बहुत अन्तर है । हमने नासमझी के कारण प्रभावना को प्रलोभन का नाम दे दिया । अगर प्रभावना प्रलोभन होती तो महापुरुष ऐसा नहीं करते ।

चक्रवर्ती की सेवा में सूचना देने वाले कर्मचारी नियुक्त होते हैं । नियुक्त कर्मचारी परमात्मा के पधारने की सूचना जब चक्रवर्ती को देता है तो चक्रवर्ती उसे साढ़े बारह लाख सुवर्ण मुद्राएँ पारितोषिक रुप में प्रदान करते हैं । अगर कोई अनजान व्यक्ति आकर सूचना देता हैं तो चक्रवर्ती साढे बारह करोड़ सुवर्ण मुद्राएँ दान में देते है । यह होती है प्रभावना । इसे कहते हैं प्रभावना । प्रलोभन और प्रभावना में अन्तर समझो । प्रभावना का अर्थ यदि प्रलोभन करते हैं तो हम जिनशासन की प्रभावना में अंतराए डालते हैं । इससे कर्म बंधन होता है। अगर आप जिनशासन की प्रभावना नहीं कर सकते तो कम से कम इतना जरुर करें कि 'प्रभावना' शब्द को गलत रुप में पेश ना करें । अच्छे कार्य की अनुमोदना करें । अनुमोदना में स्वयं जुड़े और सभी को जोड़ने का

प्रयास करें इसी में जिनशासन का भला है ।

श्री कृष्ण वासुदेव ने जिनशासन की प्रभावना करके तीर्थंकर नाम गौत्र कर्म का बंधन कर लिया । श्री कृष्ण ने अपनी नगरी के सभी लोगों से कहा – मैं दीक्षा नहीं ले सकता अगर मेरे नगर में से कोई भी दीक्षा लेना चाहे तो ले ले, पीछे अपने परिवार की चिंता ना करें । जो दीक्षा लेगा उसके पूरे परिवार की जबाबदारी/जिम्मेदारी मैं लेता हूँ ।

बंधुओं ! यह कोई लालच या प्रलोभन नहीं यह तो प्रभावना है । हमने अज्ञान के कारण जिनधर्म की प्रभावना को प्रलोभन का नाम दे दिया । 'प्रभावना और लालच' इन दोनों में बहुत अन्तर हैं, इन दोनों में कोई तालमेल नहीं बैठता । लेकिन हमने इसकी परिभाषा गलत करके लोगों को भ्रमित कर दिया ।

यह चातुर्मास जुड़ने और जोड़ने के लिए है । हमारे धर्म प्रभावना करने से, हमारे जोड़ने से कोई एक व्यक्ति भी जिनशासन से जुड़ता है, एक का भी जीवन परिवर्तन होता है तो जुड़ने वाले का भला होता है और जिसने जिनशासन के साथ जोड़ा है उसका भी भला होता है । ●

सरकार जैन साधुओं की सुरक्षा को लेकर ठोस नीति कायम करें–श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

श्रमण डॉ पुष्पेन्द्र ने कहा कि संत समाज की धरोहर हैं, जिनकी सुरक्षा संरक्षण का दायित्व समाज का है। साधु समाज के लिए जीवन जीता है। कोई भी जीव यदि दुखी है तो उसका प्रयास रहता है कि वह सुखी रहे। साधु सन्मार्ग पर लाने की शिक्षा देते हैं और दूसरों के जीवन को सुधारने के लिए सपदेश देते हैं। कर्नाटक में हाल ही में जैन संत की निर्मम हत्या भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात है। ऐसी घटना किसी साधु के प्रति कभी सुनने में नहीं आई। संत न होते समाज में तो क्या दशा होगी ?

श्रमण डॉ पुष्पेन्द्र ने कहा कि जैन धर्म अहिंसा का पर्याय है। भगवान महावीर ने जिओ और जीने दो का उपदेश दिया जिसका अर्थ है स्वयं भी जिओ और दूसरो को भी जीने दो। अहिंसा का अर्थ कायरता नहीं है। हमारे साधु /संत श्रमण कहलाते है इसलिए ही हम श्रमण संस्कृति के उपासक है जब श्रमण ही नहीं रहेंगे तो धर्म कहाँ से रह पायेगा।

किसी भी संत की भला क्या रंजिश हो सकती है। ऐसे में अहिंसक संतों को निशाना बनाकर प्रताड़ित किया जाना और फिर उनकी हत्या करना, दुर्भाग्यपूर्ण है। समाज में इन घटनाओं को लेकर असुरक्षा की भावना घर कर गई है।

आगे श्रमण डॉ पुष्पेन्द्र ने भारत सरकार से अपील करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा देश भर में जैन साधुओंकी सुरक्षा को लेकर ठोस नीति निर्धारण करके सभी जैन संतों को एवं जैन उपाश्रय, जैन मंदिरों को सुरक्षा प्रदान करें, हर राज्य में जैन समाज की विभिन्न समस्याओं के निर्धारण के लिए, समाज के उत्थान एवं विकास के लिए ''जैन आयोग'' का गठन करें।

वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रदेश में प्राचीन धार्मिक एवं तीर्थ स्थलों को विनिष्ट करने का असामाजिक तत्वों के द्वारा निरन्तर कुप्रयास हो रहा है। जैन धर्म की धरोहरों पर अवैध अतिक्रमण की दुर्भावनाएँ हो रही है। जैन संतों पर अवांछित टिप्पणी और अवैध धमकिया तो अब छोटी बाते नजर आने लगी है संतों के नौ–नौ टुकड़े होने लगे है। संतों को विहार में भी कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं इस समय भ्रमण एवं जैन संगठनों और श्रावक श्राविकाओं पर खतरे के बादल उनके ऊपर मडराते हुए साफ दिखाई दे रहे है। इसलिए जैन समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक स्थलों एवं श्रमणों, श्रमण संस्कृति के उपासको की सुरक्षा एवं श्रमण परम्परा का संरक्षण होना अतिआवश्यक है।

अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय के हितों की रक्षार्थ के लिए राज्य में श्रमणों (साधु / साध्वियों) के पैदल विहार के समय विशेष सुरक्षा एवं चर्या के संरक्षण और ठहरने के लिए विशेष व्यवस्था राज्य सरकार उपलब्ध करवाएँ। ●

संयोग पाकर जगें, जगकर साधना में आगे बढ़ें

लेखक : आचार्यप्रवर श्री. हीराचन्द्रजी म.सा.

सम्पूर्ण दुःखों का अन्त कर अव्याबाध सुख प्राप्त करने वाले सिध्द भगवन्त, दुःख-सुख की वेदना अलग होकर अपने-आपको अनन्त सुखी बनाने वाले अरिहन्त भगवन्त, सुख का राज मार्ग, समिति-गुप्ति की आराधना कर साधना में चरण बढ़ाने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन । बन्धुओं !

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में दुःख - मुक्ति का राज-मार्ग बताया जा रहा है। जितने-जितने पुण्यशाली जीव हैं, दूसरे शब्दों में हलुकर्मी जीव हैं, उनको ज्यों ही संयोग मिलता है, संयोग मिलने के साथ वे साधना में चरण बढ़ाने लगते हैं। वे चाहे जिस कुल में हों, चाहे जिस जाति में हों, चाहे जैसी परिस्थिति में हों, चाहे जिस स्थान पर हों वे साधना में आगे बढ़ सकते हैं। उनके लिए कोई बन्धन नहीं हैं। बात कहने जायें तो यों कह सकते हैं कि एक मच्छीमार भी एक बार की संगति से सुख का राज-मार्ग पकड़ सकता है। कन्हड़ जैसा कठियारा भी संयोग पाकर सुख के मार्ग में आगे बढ़ गया। कथा भाग वर्णन करता है - कठियारे की योनि से एक जन्म करके वह जीव मोक्षगामी होगा। परिस्थिति देखें, संगति देखें, जाति और कुल देखें तो शायद आपका दर्जा तो ऊपर है ही, फिर भी शायद आप पीछे हैं।

एक निमित्त वाला जग सकता है। एक बार संयोग पाने वाला आगे बढ सकता है। कठिन स्थिति में जागरण हो सकता है। पर जिन्हें सब प्रकार की सहूलियत मिली है फिर भी उनका जगने का मानस नहीं बन रहा है । शायद वे समय पूरा कर रहे हैं। रिवाज निभा रहे हैं ताकि व्यवहार बना रहे, इसकी तो सोच है लेकिन आगे बढ़ने की भावना, प्रगति उन्नति करने की चाहना और अनित्य-अशरण का उनका चिन्तन तक नहीं चलता ।

जगने वालों को, जगने के लिए एक पल मिलना चाहिए। न जाने कितने दृष्टान्त आपने सुने हैं, पढ़े हैं, अनुभव किए हैं। परिस्थिति प्रतिकूल होते हुए भी भीतर के वियोग का और बाहर के सत्संग का संयोग मिलते ही व्यक्ति जगने में सफल हो जाता है। आपने हमने न जाने कितने दृष्टान्त सुन लिए । दृष्टान्त तो सुने ही, सुनते-सुनते इतने पक्के हो गए कि पूछो मत । मैं मेरा चिन्तन करूँ, आप अपना सोचना । ज्ञान के लिए, प्राप्त संयोग के लिए, मुक्ति के लिए जो चिन्तन होना चाहिए, जो पुरुषार्थ किया जाना चाहिए, वह नहीं हो रहा है। तत्त्वचिन्तक प्रमोदमुनिजी ने कहा - खाने के लिए साधारण-सी रोटी है, उसे भी खाने वाला प्रसन्न मन से प्रसाद मानकर ग्रहण करता है तो वह खाया सार्थक होता है। बढ़िया से बढ़िया खाने को मिल रहा है, फिर भी उस खाने में कोई-न-कोई कमी निकालने वाले हैं फिर वो खाना सार्थक कैसे होगा? क्या वजह है? मूल कारण है- जो ज्ञान, चेतना, वैराग्य जगना चाहिए वह अभी जगा नहीं । अगर यों कह दूँ कि वह ज्ञान समाप्त हो गया तो कोई अतिशयोक्ति नहीं।

आचार्य श्री गुमानचंद्रजी महाराज (रत्नवंश के आद्यपुरुष पूज्य कुशलचन्द्रजी महाराज के शिष्य एवं उनके पश्चात रत्नवंश के प्रथम आचार्य) के शिष्य दौलतरामजी महाराज थे, वे जितेन्द्रिय थे । चालीस साल का संयम जीवन था फिर भी विगय का सेवन तक नहीं किया। पाँचों विगयों का त्याग । वे क्यों चमके? उनका नाम आज तक क्यों लिया जा रहा है?

बात यह है कि वे अन्तर्मन से वैरागी थे इसलिए

त्याग में आगे बढ़ गए। उन्हें रुक्ष आहार से सन्तुष्टि मिल जाती, विगय-युक्त आहार करने की कभी मन में ही नहीं आई।

आज कई भाई-बहिन हैं जो आयंबिल तो करते हैं पर कैसे करते हैं? आप ज्यादा जानते हैं। आयंबिल में पचास-पचास आइटम। इतने आइटम हैं लेकिन कहने वाले कहते हैं - आयंबिल करने में मजा नहीं आया। आज आयंबिल में दर्जनों आइटम बनाए जाते हैं, खाए जाते हैं ऐसा क्यों हैं? यह सब खाने की आसक्ति का कारण है जो अनेकानेक खाने के पदार्थ होने पर भी मन नहीं भरता।

खाने वाले मात्र एक या दो आइटम खाकर आयंबिल करते हैं। मात्र एक दाना खाकर मन को सन्तुष्ट करने वाले आयंबिल - आराधक हुए हैं। उन साधकों ने एक-दो बार नहीं, बार-बार आयंबिल - साधनाएँ की हैं। आज आयंबिल में एक दाना खाया, कल उपवास, परसों फिर आयंबिल और आयंबिल में वही एक दाने का आहार। आज आयंबिल में कई चीजें बनती है, खाई जाती है पर उन्हें कितनी सन्तुष्टि है? इस पर आप चिन्तन करना। खाने में दस अच्छी चीजें हैं उनकी बात करें या न भी करे किन्तु एक चीज ठीक नहीं, उसकी चर्चा जरूर करते हैं। कुछ तो तप करके भी खाने में कमी ही नहीं देखते, किन्तु बड़-बड़ाते हैं, बार-बार गिनाते हैं कि अमुक चीज ठीक नहीं बनी।

आयंबिल तप है, साधना है। आयंबिल करने वाला तपस्या करता है। या इन्द्रियों की तृप्ति ? तप-साधना करने वाला खाने का स्वाद नहीं देखता। स्वाद की तरफ उसका न तो ध्यान जाना चाहिए और न कहने की आदत ही होनी चाहिए कि खाने में अमुक कमी है। आयंबिल तप की साधना करने वाला, स्वाद अच्छा है या नहीं, यह नहीं सोचे। वह तो यह सोचे कि मुझे खाने को मिल रहा है, व्यवस्था करने वालों ने कितना ध्यान रखा है।

आज तप साधना के बजाय इन्द्रियों की तृप्ति की ओर लोगों का ध्यान है। अच्छे-से-अच्छा बनाकर और खाकर भी जिन्हें सन्तुष्टि नहीं, वे शरीर को भाड़ा चुका रहे हैं ऐसा मानना तो दूर, कहते तक भी नहीं। आपने आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी महाराज के बारे में सुना है। वे इसी जोधपुर शहर के महापुरुष थे। एक निमित्त मिला और वे जाग गये। घर से पिता-पुत्र दोनों पुष्कर गए। पुष्कर में अस्थियाँ प्रवाहित कर लौट रहे थे। रास्ते में मेड़ता आया। वे दोनों मेड़ता विराजित पूज्य श्री कुशलचन्द्रजी महाराज के दर्शन- वन्दन के लिए उपस्थित हुए। दर्शन-वन्दन के सुयोग से वैराग्य जगा और दीक्षित हो गए।

दीक्षा लेना और दीक्षा लेकर रम जाना दोनों में बड़ा फर्क है। दीक्षा ही क्या, साधना-आराधना का कोई काम हो उसमें रमना और उसे करना दोनों में अन्तर होता है। मान लीजिए आप सामायिक लेते हैं। सामायिक लेने के बाद कितने पाप घटते हैं, विषय-कषाय से कितनी निवृत्ति होती है, आप इस पर सोचें। आचार्य भगवन्त श्री गुमानचन्द्रजी महाराज ने दीक्षा लेकर कैसा पुरुषार्थ किया, आप वृत्तान्त सुन चुके हैं। बात चाहे हम साधकों की हो या आप देशविरतियों की, आप नोट कर लें- परिवर्तन में न भगवान सहायक हैं और न ही शास्त्र ही, परिवर्तन होता है- पुरुषार्थ से, संयम से, साधना से। हम, दृष्टान्तों के माध्यम से कहते हैं, आप सुनते हैं तो सुनने वालों के मन में कम खाओ ज्यादा खाओ उसके बजाय कुछ-न-कुछ चिन्तन चलना चाहिए, जागरण होना चाहिए। जब तक आचरण नहीं होगा, जीवन में परिवर्तन नहीं आएगा।

जगने वाले एक निमित्त से ही जग जाते हैं। वैरागी ही नहीं, दीक्षित भी हो जाते हैं। दीक्षित तक ही नहीं, साधना करके मुक्त बन जाते हैं। एक-एक निमित्त कैसे-कैसे जागरण करता है? तपस्वी ताराचन्द्रजी महाराज ने तेरह साल तक संयम पाला, उन्होंने पाँचों

विगयों का त्याग रखा, एक भी विगय का सेवन नहीं किया। वे बेले-बेले पारणा करते थे और पारणक में भी विगय का सेवन नहीं करते। आप महापुरुषों के जीवन चरित्र सुनकर अन्तर्मन में जागृति का संकल्प करें। आपको बहुत सुनाया जाता है, आप सुनते भी हैं किन्तु लगता किन्हीं-किन्हीं को ही है। अधिकांश तो भारी कर्मा जीव हैं, इधर से सुना उधर से निकाल दिया।

जगने वालों के लिए एक निमित्त बहुत होता है। एक बार के संयोग से मच्छीमार जग सकता है, कान्हड़ कठियारा जग सकता है, फिर आप क्यों नहीं जगते? क्यों चोरों का सरदार, साधुओं का सरदार ही नहीं, प्रधान आचार्य बन गया? ये थे जम्बू स्वामी के पश्चात भगवान महावीर के तृतीय पट्टधर आचार्य प्रभव। मैं पहले कह गया, आज फिर दोहरा रहा हूँ- पेटी में पड़ा कपड़ा सर्दी नहीं मिटा सकता। रसोई में पड़ी मिठाई पेट नहीं भर सकती। बैंक में पड़ा पैसा विपत्ति से नहीं बचा सकता। इसी तरह आप दुःख से मुक्ति चाहते हैं तो साधना करनी होगी, पुरुषार्थ का परिचय देना होगा।

एक वचन ही सत्गुरु केरो, जो पैठे दिल मांय रे प्राणी,

नीच गति में ते नहीं जावे, एम कहे जिनराय रे प्राणी।

साधुजी ने वन्दना नित-नित कीजे, प्रातः उगन्ते सूर रे प्राणी ।।

लग जाय तो एक वचन काफी है। नहीं लगने वालों के लिए एक वचन नहीं, दिनों-महिनों वर्षों तक सुनाया जाये फिर भी उन्हें नहीं लगता। कहा तो यह जाता है कि जो पत्थर हथौड़े से नहीं टूटे उस पर रोज रस्सी पड़ती जाय तो पत्थर जैसी कठोर वस्तु पर भी निशान बन जाता है। आपने देखा होगा - कुएँ पर पानी निकालने के लिए रस्सी अन्दर डाली जाती है, वहाँ निशान बन जाते हैं। पत्थर कठोर है, रस्सी कोमल है। कोमल होते हुए रस्सी के निरन्तर आने-जाने से पत्थर पर निशान बन जाया करते हैं।

आप रोज सुनते हैं। सुनते-सुनते कुछ-न-कुछ बात लगती ही है।

रोज सद्- शिक्षा सुनने से जीवन-सुधार होना स्वभाविक है। बस, लगनी चाहिए रगड़ । बिना रगड़ लगे काम नहीं होने वाला है।

आप-हम आचार्य भगवन्त गुमानचन्द्रजी महाराज, आचार्य भगवन्त रत्नचन्द्रजी महाराज, पूज्य दुर्गादासजी महाराज, उत्कृष्ट क्रियापात्र ताराचन्द्रजी महाराज जैसे महापुरुषों के प्रसंगों को सुनकर हम अपने भीतर में साधना का बल बढ़ायें, कषायों को दूर करने का प्रयास करें तो साधना में विकास करना सहज होगा।

श्रुतज्ञान की सेवा में श्रावकों में अभी वैसा रस नहीं है। हम महापुरुषों के जीवन को देखकर, जीवन-चरित्र सुनकर जगें। जगाने के लिए संयोग प्राप्त है। हम, जगकर साधना-मार्ग में आगे बढ़ेंगे तो कल्याण हो सकेगा। ●

जीवदया व गौपालन के लिए

श्री क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान

उज्ज्वल गौपालन संस्था

नवकार तीर्थ, लोणीकंद की यह गोशाला आप सभी दानवीर के सहयोग से गोवंश का अभय दान बन गयी हैं । आपके परिवार की हर खुशी में एंव विभिन्न प्रसंग पर रु. १००१/- देकर एक गोवंश को अभय दान दे। या रु. ५१००१/- देकर २१ साल की गोशाला की मिती लेकर जीवदया के इस महायज्ञ में सहयोग देकर मनःशांती पाईए।

नवकार तीर्थ, पुणे - नगर रोड, लोणीकंद, जि. पुणे.
फोन : २७०६९६९०, ९८२२९५७७८८
पुणे ऑफिस : दुग्गल प्लाझा, प्रेमनगर, बिबवेवाडी रोड, पुणे ३७. **फोन** : ६५२५७७०५, **मो.**:९८५०७१४१६४
www.jainnavkartirth.goshala.org

संस्था को दिए गए दान पर आयकर कानून कलम ८० जी के अंतर्गत इन्कमटॅक्स की छूट मिलेगी

कव्हर तपशील - ऑगस्ट २०२३

❖ **गच्छाधिपती आचार्य श्री दौलतसागर सूरिश्वरजी म.सा., आचार्य श्री हर्षसागर सूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा**

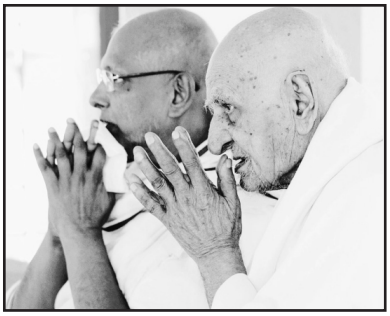

गच्छाधिपती आचार्य श्री दौलतसागर सूरिश्वरजी म.सा., आचार्य नरदेवसागर सूरिश्वरजी म.सा., आचार्य हर्षसागर सूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा यांचा चातुर्मास श्री देवसूर तपागच्छ जैन महासंघ कोंढवा तर्फे माहेश्वरी भवन येथे संपन्न होत आहे. येथे रोज सकाळी प्रवचन व विविध धार्मिक कार्यक्रमाचे आयोजन होत आहे. श्रावकांसाठी पौषध पर्वचे आयोजन केलेले आहे. रविवारी जिन शासनम् शिबीरचे विशेष आयोजन करण्यात आले.

❖ **आगमज्ञाता डॉ. समकितमुनिजी म.सा.**
आदिनाथ स्थानक चातुर्मास

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि प.पू. डॉ. समकितमुनिजी म.सा. आदि ठाणा ५ यांचा आदिनाथ स्थानकात भव्य चातुर्मास संपन्न होत आहे. रोज सकाळी ८.४५ ते ९.४५ या वेळेत प्रवचन व रात्री ८.३० ते ९.०० सर्वतोभद्र चौमुखी जापचे आयोजन होत आहे. चातुर्मासाच्या सुरुवातीलाच तेला तपचे आयोजन झाले. यात सुमारे १००८ तपस्वींनी भाग घेतला. तसेच १८ दिवसीय पूण्य कलश आराधना तपामध्ये सुमारे १५० श्रावक-श्राविकांनी भाग घेतला. २४ जुलै रोजी या सर्व तपस्वींचा भव्य वरघोडा काढण्यात आला.

❖ **निर्यापक मुनि श्री १०८ वीरसागरजी महाराज सा. संघ – सूस दिगंबर जैन मंदिर, पुणे**

दिगंबर जैन मंदिर, सूसगांव येथे निर्यापक मुनिश्री १०८ वीरसागरजी महाराज, मुनिश्री विशालसागरजी महाराज, मुनिश्री धवलसागरजी महाराज, मुनिश्री उत्कृष्टसागरजी महाराज आदि ठाणा यांचा चातुर्मास श्री सूस दिगंबर जैन मंदिर सूसगांव, पुणे येथे संपन्न होत आहे. रोज सकाळी ध्यान योग शिबीर, प्रवचन, स्वाध्याय, प्रश्नोत्तर, मुलांसाठी पाठशाळा इ.कार्यक्रम होत आहे.

❖ **आचार्य श्री राजरत्न सूरिश्वरजी म.सा.**
नाकोडा भैरव जैन भवन, गुरुवार पेठ, पुणे

श्री गोटीवाला ओसवाल जैन संघ तर्फे आचार्य श्री राजरत्न सूरिश्वरजी म.सा. आदि ठाणा ३ यांचा चातुर्मास नाकोडा भैरव जैन भवन, गुरुवार पेठ येथे संपन्न होत आहे. येथे रोज प्रवचन व विविध धार्मिक कार्यक्रमाचे आयोजन होत आहे.

❖ **महासाध्वी श्री कुमुदलताजी म.सा.**
बिबवेवाडी जैन स्थानक, पुणे

बिबवेवाडी जैन स्थानक, पुणे येथे महासाध्वी श्री कुमुदलताजी म.सा., साध्वी श्री महाप्रज्ञाजी म.सा. आदि ठाणा ४ यांचा चातुर्मास बिबवेवाडी स्थानकात भव्य कार्यक्रमात संपन्न होत आहे. रोज प्रवचन व विविध धार्मिक कार्यक्रमाचे आयोजन होत आहे. दर गुरुवारी मंगलकारी अनुष्ठानचे आयोजन करण्यात येते. यात सुमारे दीड हजार श्रावक, श्राविका भाग घेत आहे. दर शुक्रवारी प्रभू पार्श्व पद्मावती आराधना होत असून स्थानकात ४०० एकासना व भारतातील विविध भागातून १५०० एकासनाची आराधना होत आहे. दर शनिवारी प्रश्नमंच व दर रविवारी बाल संस्कार शिबीराचे आयोजन करण्यात येत आहे.

❖ **वाणीभूषण श्री प्रीतिधाजी म.सा.**

वर्धमान प्रतिष्ठान, शिवाजीनगर – पुणे

वाणीभूषण, संस्कार भारती श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. आदि ठाणा ८ यांचा चातुर्मास विविध कार्यक्रमात संपन्न होत आहे. रोज सकाळी प्रवचन व विविध धार्मिक कार्यक्रम होत आहे. १ जुलै रोजी आनंद जैन पाठशाळा वार्षिक स्नेह संमेलन विविध कार्यक्रमात संपन्न झाला. यात पुणे शहर व जिल्ह्याच्या १८ आनंद जैन पाठशाळेचे सुमारे ३५० मुला-मुलींनी व शिक्षकांनी भाग घेतला.

❖ **चंद्रयान ३ – शास्त्रज्ञ श्री. संजयजी देसर्डा महत्त्वपूर्ण भूमिका**

भारतीय अंतराळ संशोधन संस्था म्हणजेच इस्रो आपल्या महत्त्वाकांक्षी चंद्रयान मोहिमे अंतर्गत १४ जुलैला आंध्र प्रदेशातील श्रीहरिकोटा येथून चंद्रयान-३ चं यशस्वी प्रक्षेपण केले. संजयजी गुलाबचंदजी देसर्डा यांची अत्यंत महत्त्वाची भूमिका ठरलेली आहे. (बातमी पान नं. ७२)

❖ **''वाणिज्य विश्व'' सुवर्ण महोत्सवी – विशेषांक**

दि पूना मर्चंट चेंबरचे मुखपत्र असलेल्या 'वाणिज्य विश्व' मासिकाच्या सुवर्णमहोत्सवी विशेषांकाचे प्रकाशन श्री. शरदजी पवार यांच्या हस्ते व विठ्ठलशेठ मणियार, झी २४ तास या न्यूज चॅनलचे संपादक डॉ. निलेशजी खरे, उद्योजक फत्तेचंदजी रांका, चेंबरचे अध्यक्ष राजेंद्रजी बाठिया, सचिव रायकुमारजी नहार, उपाध्यक्ष अजितजी बोरा, सहसचिव ईश्वरजी नहार, 'वाणिज्य विश्व'चे संपादक प्रवीणजी चोरबेले, सहसंपादक आशीषजी दुगड, बीएमसीसीचे प्राचार्य जगदीशजी लांजेकर या मान्यवरांच्या उपस्थितीत झाले.
(बातमी पान नं. ७१)

❖ **जैन मुनि हत्येच्या निषेधार्थ मूक मोर्चा, पुणे**

पुणे : जैन दिगंबर मुनी आचार्य श्री १०८ कामकुमारनंदजी महाराज यांच्या अमानुष हल्ल्याच्या निषेधार्थ सकल जैन संघाच्या वतीने २० जुलै २०२३ रोजी पुण्यात मूक मोर्चाचे आयोजन करण्यात आले होते. हल्लेखोरांना कठोर शिक्षा व्हावी, या मागणीचे निवेदन यावेळी जिल्हाधिकाऱ्यांना देण्यात आले.
(बातमी पान नं. ८३)

❖ **बडीसाजन व बोथरा परिवार**

मोफत घरकुल भूमिपूजन – अहमदनगर

नगर – श्री बडीसाजन ओसवाल श्रीसंघाच्या व बोथरा परिवाराच्या वतीने समाजातील निवारा नसलेल्या ३० गरजू परिवारांना मोफत हक्काचे घरकुल देण्यात येणार आहे. केडगाव येथील उभारण्यात येणाऱ्या 'पारस अपार्टमेंट' या भव्य पाच मजली इमारतीचे भूमिपूजन झाले. बोथरा परिवारातील चार पिढ्यांच्या उपस्थितीत घरकुल प्रकल्पाचे भूमिपूजन झाले (बातमी पान नं. ८५)

❖ **''जैना'' द्विवर्षीय कन्वेंशन २०२३ – अमेरिका**

''जैना'' (असोसिएशन ऑफ जैन इन नॉर्थ अमेरिका) संस्थेचे द्विवर्षीय कन्वेंशन २०२३ फ्लोरिडा, अमेरिका येथे भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. ६८)

❖ **डॉ. किशोरजी देसर्डा – प्राचार्यपदी**

पुणे : वाघोली येथील भारतीय जैन संघटनेचे कला विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालयात गेल्या पंचवीस वर्षांहून अधिक काळ कार्यरत असणारे डॉ. किशोर संपतलालजी देसर्डा यांची नुकतीच 'महाराष्ट्र एज्युकेशन सोसायटी'च्या 'गरवारे कॉलेज ऑफ कॉमर्स' च्या प्राचार्यपदी नियुक्ती झाली.
(बातमी पान नं. ८७)